अध्यापकों के लिए
प्रशिक्षण मैन्युअल

TRAIDCRAFT
Fighting poverty through trade

FAIR TRADE FORUM INDIA

BUILDING A WIDER HORIZON
CEC
WITH LABOUR

इस मैन्युअल का प्रयोग कैसे करें

यह मैन्युअल मार्गदर्शक मैन्युअल के हिस्से के तौर पर तैयार किया गया है। अपेक्षा की जाती है कि यह मैन्युअल बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए अध्यापकों द्वारा एक संसाधन सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाएगा। यह मैन्युअल उन लोगों के लिए लिखा गया है जो प्रशिक्षण को क्रियान्वित करेंगे।

यह मैन्युअल तीन हिस्सों में है:

१. भूमिका: इस भाग में घरखाता उत्पादन, अध्यापकों की भूमिका और एक अध्यापक की गुणवत्ता से संबंधित सामान्य जानकारियां दी गई हैं।

२. शिक्षक-प्रशिक्षक के लिए सत्र: इस हिस्से में बच्चों को पढ़ाने के प्रारंभिक कदमों, कक्षा, पाठ्यचर्या और मूल्यांकन से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई है।

विषय सूची

१. भूमिका

२. सत्र १ – प्रारंभ

३. सत्र २ – कक्षा

४. सत्र ३ – पाठ्यचर्या

५. सत्र ४ – मूल्यांकन

६. सामान्य सिफारिशें

७. निष्कर्ष

अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण मैन्युअल

१.१ भूमिका

घरखाता दस्तकारी उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रों में से एक प्रमुख क्षेत्र रहा है। इस तरह के दस्तकार और कारीगर हमारे देश में कामगारों का दूसरा सबसे बड़ा समूह हैं। इसका मतलब है कि लाखों भारतीय उत्पादन की परंपरागत पद्धतियों, परंपरागत कौशलों व तकनीकों के सहारे कुटीर उत्पाद बनाते हैं और इसी से उनकी आजीविका चलती है। अधिकृत आंकड़ों के अनुसार, लगभग ७० लाख[१] कारीगर अपनी आजीविका के लिए कारीगरी आधारित उत्पादन में सक्रिय है। घरखाता उद्योग के लिए खर्चे, बुनियादी ढांचे और व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रशिक्षण की बहुत ज्यादा आवश्यकता नहीं होती इसलिए बहुत सारे लोगों के लिए रोजगार का यही सबसे सरल साधन है। यह व्यवसाय पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरागत ज्ञान व कौशल के के सहारे जारी रहता है और इस तरह पूरा परिवार उत्पादन में लगा रहता है। इस प्रक्रिया में इन परिवारों के बच्चे भी उत्पादन प्रक्रिया में खिंचते चले जाते हैं। भले ही बच्चों का शुरुआती योगदान बहुत नगण्य हो मगर जैसे-जैसे वे काम करते चले जाते हैं, पूरी तरह अपने परिवार के काम में डूब जाते हैं और अपना बचपन व अधिकांशतः अपनी शिक्षा से वंचित ही रह जाते हैं। घरखाता क्राफ्ट उत्पादक परिवारों के ऐसे बच्चों को औपचारिक शिक्षा के दायरे में लाना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है जब उनकी बस्तियों में शिक्षा केंद्र और ब्रिज स्कूल खोले जाएं।

ऐसे हालात में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वही अभिभावकों और बच्चों के बीच सबसे महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं और वही मां-बाप की सोच में बदलाव ला सकते हैं ताकि मां-बाप अपने बच्चों को स्कूल भेज सकें।

१.२ अध्यापक कौन है?

एक अध्यापक/प्रशिक्षक बच्चों को सीखने और विकसित होने में मदद देता/देती है और इस तरह वह सीखने और बढ़ने के लिए एक उपयुक्त वातावरण मुहैया

कराने के लिए सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदान कर सकता है – कोड ऑफ एथिक्स फॉर प्रोफेशनल टीचर्स।[२]

कोई भी तजुर्बेकार अध्यापक और शिक्षाविद अच्छी तरह जानता है कि चाहे पाठ्यचर्या कितनी भी अच्छी हो और पाठ्यक्रम कितने भी बढ़िया ढंग से तैयार किया गया हो, वह तब तक निष्प्राण ही रहता है जब तक सही तरह के अध्यापन और सही तरह के अध्यापकों के माध्यम से उसमें प्राणों का संचार नहीं किया जाता – द्वितीय शिक्षा आयोग।

स्कूल ऐसे प्रारंभिक स्थानों में से एक होता है जहां बच्चों का व्यवहार और भविश्य की शैक्षिक सफलता आकार लेती है। अध्यापकों में बच्चों के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहार भी होता है। बच्चों के प्रारंभिक स्कूली वर्ष क्यों इतने महत्वपूर्ण होते हैं, इसका कारण यह है कि अपने शैक्षिक जीवन का आधार उन्हें यही मिलता है। बच्चे उत्साहपूर्वक परीक्षा पास कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि अध्यापक अपने दायित्व से प्रेम करते हों और वे बच्चों को अपने विद्यार्थियों को सहायता दे सकें और उन्हें एक गर्माहट भरा माहौल मुहैया करा सकें।

अध्यापक के पास अपनी कक्षा के भीतर बहुत भारी जिम्मेदारी होती है। इसकी वजह यह है कि सारे विद्यार्थी उसी पर आश्रित रहते हैं। अध्यापक जो भी कहता/कहती है उससे विद्यार्थियों पर सीधा असर पड़ता है। अगर अध्यापक खुश है या गुस्से में है तो वही भाव सीधे बच्चों में भी फैल जाता है क्योंकि अध्यापक का रवैया एक संक्रामक प्रभाव छोड़ता है। अगर अध्यापक हंसता/हंसती है तो विद्यार्थी भी हंसने लगते हैं। अध्यापक ही शिक्षा के भीतर पैदा होने वाले सामाजिक व्यवहार के लिए उत्तरदायी होते हैं।

अध्यापकों को एक गर्माहट भरा और सुरक्षापूर्ण माहौल तो रचना ही चाहिए मगर इसके साथ ही उन्हें पेशेवर रवैया भी अपनाना चाहिए। अगर कक्षा में बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं तो इसका नतीजा उनकी अकादमिक प्रगति में दिखाई देता है। हर रोज विद्यार्थियों को अपने अध्यापक में ऐसा रवैया दिखाई देता है जो उनके लिए नया होता है। इसी तरह विद्यार्थी भी हर रोज एक ऐसा व्यवहार करते हैं जिससे शिक्षक को उनके बारे में हर रोज कुछ नया सीखने का मौका मिलता है।

१.३ अध्यापन क्या है?

अध्यापन का आशय विद्यार्थियों को एक प्रासंगिक, सार्थक और यादगार ढंग से सीखने के लिए प्रोत्साहित करना होता है। इसका आशय अध्यापन के प्रति उत्साह और दूसरों में उस उत्साह का संचार करने से भी है। अच्छा अध्यापन सिद्धांत और व्यवहार की खाई को पाट देता है।

१.४ अच्छे अध्यापक की क्या खासियतें होती हैं?

* जिज्ञासा
* पढ़ाने की तैयारी
* समय की पाबंदी
* विद्यार्थियों की सहायता और फिक्रमंदी
* स्थिरता
* विनम्रता
* दृढ़ता और नियंत्रण
* विनोदपूर्ण स्वभाव
* सटीक रिकार्ड रखना

१.५ एक अध्यापक के बुनियादी गुण

१. अध्यापक को रोल मॉडल होना चाहिए।

२. अध्यापक का चरित्र - एक खिला हुआ फूल हरेक का जी मोह लेता है। उसी तरह अपने बर्ताव और रवैये से अध्यापक को भी सभी को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होना चाहिए।

३. व्यक्तित्व - दमकदार, सुखद अहसास देने वाला और प्रभावशाली व्यक्तित्व। परिष्कार, सुखद आचरण, उद्यमशीलता, उत्साह, लगन, पहलकदमी और खुलापन एक आदर्श अध्यापक के आवश्यक गुण होते हैं।

४. मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य - अध्यापक के पास एक ठोस मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर होना चाहिए।

५. सामाजिक समायोजन - अध्यापक को सामाजिक परिवेश के अनुसार खुद को समायोजित करने में सक्षम होना चाहिए।

६. पेशेवर कुशलता - उसके पास अध्यापन के प्रति सच्ची लगन और दायित्व का गहरा बोध होना चाहिए। उसके पास वर्तमान घटनाओं का उपयुक्त ज्ञान आवश्यक है।

७. उत्तरदायित्व - प्रत्येक बच्चे को शिक्षा पाने का अधिकार है ताकि वह देश का उत्पादनशील नागरिक बन सके। लिहाजा, विद्यार्थियों की प्रगति के लिए अध्यापक उत्तरदायी होते हैं और अध्यापकों को अपने बच्चों की प्रगति के बारे में जानने का अधिकार होता है।

सत्र

सत्र १: प्रारंभ

जहां औपचारिक स्कूल उपलब्ध नहीं हैं और बच्चे परिवार के साथ किसी न किसी तरह के उत्पादक कार्य में संलग्न हैं वहां अध्यापक की भूमिका न तो कक्षा में शुरू होती है और न ही कक्षा खत्म होने के साथ खत्म हो जाती है। ऐसे माहौल में बच्चे अध्यापक के पास नहीं आते बल्कि अध्यापक को बच्चों को बुलाकर लाना होता है। इसके लिए अध्यापक को समुदाय के मुखिया से बार-बार बात करनी होती है और खुद जाकर उन परिवारों से मिलना पड़ता है जिनमें स्कूली उम्र के बच्चे हैं। परिवारों को शिक्षा के लाभों वे अवगत कराया जाना चाहिए और समय-समय पर परिवार नियोजन, बच्चों के अधिकारों तथा संबंधित विषयों पर कार्यशालाओं का भी आयोजन किया जाना चाहिए ताकि समुदाय की दिलचस्पी पैदा की जा सके। परिवारों और समुदाय के साथ अच्छे संबंध बनाने का एक तरीका यह है कि उन्हें विभिन्न पहचान संबंधी कार्ड जारी करवाए जाएं और उनके लिए स्वास्थ्य जांच शिविरों आदि का आयोजन किया जाए। जब परिवारों के साथ अच्छे संबंध बन जाते हैं तभी आप बच्चों को शिक्षा केंद्र में दाखिल करा सकते हैं।

२.१.१ एक रिश्ता कायम करना

क. स्थानीय लोगों/समुदाय के मुखिया को साथ लें - स्थानीय लोगों और समुदायों के प्रमुख लोगों के साथ गहरे संबंधों से समुदाय और सेवा प्रदाता के फासले को पाटने में काफी मदद मिलती है। यानी, समुदाय को इस बात का अहसास होना चाहिए कि जो कदम उठाए जा रहे हैं वे उसी के फायदे के लिए हैं। उदाहरण के लिए: जो लोग इस तरह के संवाद और संबंध के पक्ष में नहीं हैं उन्हें भी आमंत्रित करें और उन्हें संबंधित प्रयासों के लाभों से अवगत कराएं। उन्हें यह भी बताएं कि इससे बच्चों को क्या लाभ होने वाला है। उन्हें भी अपने अनुभव बताने के लिए कहें।

ख. कोई बच्चा छूट न जाए/सबको शिक्षा - समुदाय के नेताओं की मदद से सुनिश्चित करें कि कोई भी बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रह जाए।

यह सफलता अपने आप में समुदाय में एक बड़ा फर्क पैदा कर देगी।

२.१.२ लिहाजा, प्रारंभिक कदम इस प्रकार होंगेः

१. समुदाय के मुखिया से मिलना।

२. समुदाय के साथ बैठकें आयोजित करना।

३. परिवार के सदस्यों से जाकर मिलना और उन्हें शिक्षा के लाभों से अवगत कराना।

४. समुदाय के लिए तथा महिलाओं और बच्चों के लिए साफ-सफाई, परिवार नियोजन, बाल अधिकारों तथा ऐसे ही अन्य सवालों पर कार्यशालाओं का आयोजन करना।

५. स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन

६. शिक्षा केंद्र में दाखिलों के बारे में जानकारियों का प्रसार करने के लिए अभियान चलाना।

७. परिवारों और समुदाय के अन्य लोगों को आधार कार्ड, राशन कार्ड आदि दिलाने में मदद देना।

८. इस बात का नमूना पेश करना कि बच्चों को शिक्षा केंद्र में किस तरह का अनुभव और शिक्षा मिलेगी।

९. बच्चे को अपना सपना साकार करने में मदद दें जिसके लिए शिक्षा ही आधार है।

१०. समुदाय की महिलाओं को लेकर समितियों का गठन करना ताकि वे शिक्षा केंद्र में दाखिले के बाद बच्चे की प्रगति पर लगातार नजर रख सकें।

प्रारंभिक प्रक्रिया शुरू हो जाने और शिक्षा केंद्रों में बच्चों के दाखिले का मतलब यह नहीं है कि अध्यापक की भूमिका खत्म हो चुकी है। यह एक सतत प्रक्रिया है और पूरी प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों और परिवारों के साथ लगातार संवाद जारी रखना चाहिए। केवल ऐसी स्थिति में ही परिवारों के लोग अध्यापकों पर

भरोसा रख सकते हैं। इसका मतलब यह है कि दाखिले शुरू होने से पहले या बच्चों का पहला बैच शिक्षा केंद्र में आ जाने के बाद भी समुदाय और परिवारों के साथ लगातार संबंध बनाए रखना बहुत अनिवार्य है।

२.१.३ अध्यापक की भूमिका

१. अध्यापक विद्यार्थियों के लिए एक सहायक की भूमिका निभाता है और पूरी शैक्षिक व्यवस्था में परामर्श व सहायता देता है।

२. अध्यापक एक समाज सुधारक भी है। समुदाय में शिक्षा और उसके महत्व का प्रसार करके वह समाज में बदलाव के लिए कदम उठाता/उठाती है।

३. अध्यापक बहुत कुशल संप्रेषक होते हैं और वे दूसरों को भी प्रेरित करने में सक्षम होते हैं।

४. अध्यापक समुदाय और एनजीओ के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। उनकी भूमिका दोनों तरफ होती है - समुदाय में भी और एनजीओ में भी। समुदाय की आस्था अध्यापकों में सबसे ज्यादा होती है।

५. न केवल विद्यार्थियों के लिए बल्कि समुदाय के अन्य लोगों के लिए भी एक उपयुक्त शैक्षिक वातावरण रचने के लिए अध्यापकों को सभी संभव कदम उठाने चाहिए।

सत्र २: शिक्षा

३.१.१ कक्षा

क. विद्यार्थी उन चीजों को आत्मसात करने की कोशिश करते हैं जो वे अपने अध्यापकों, समुदाय, संगी-साथियों और परिवार से सीखते हैं। उनके पास प्रेक्षण, सीखने और सूचनाओं को ग्रहण करने का बहुत तीक्ष्ण बोध होता है।

ख. विद्यार्थियों के साथ रिश्ता बनाना: विद्यार्थियों के साथ सम्मानजनक तथा निष्पक्ष व्यवहार करें, उनकी बात गौर से सुनें, उन्हें स्पष्ट और सकारात्मक फीडबैक दें, सबके साथ एक जैसा बर्ताव करें और विद्यार्थियों को नाम से बुलाने/पहचानने की आदत डालें।

ग. अभ्यास: अध्यापक किसी निष्चित विशय पर कक्षा ले सकते हैं। ऐसे मौके पर शेष अध्यापक उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन कर सकते हैं और सुधार के लिए सुझाव भी दे सकते हैं।

घ. लक्ष्य: संबंधित पाठ का लक्ष्य क्या है और इससे बच्चों को क्या सीखना है, यह बात जहन में रखें।

३.१.२ सिद्धांत

शिक्षा केंद्रों में मुख्य रूप से हिंदी, अंग्रेजी और गणित पढ़ाई जा सकती है। ज्यादातर बच्चे ६-१४ साल की उम्र के हैं। संभव है विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग कक्षाओं का बंदोबस्त न किया जा सके। ऐसे में प्रत्येक बच्चे को उसकी सामर्थ्यों का आकलन करने के बाद निश्चित समूह में रखना होगा।

क. कक्षा के लिए तैयारी: अगर कक्षा केवल ३० मिनट की है तो भी अध्यापक को उसकी अच्छी तरह तैयारी करनी चाहिए वर्ना उसके पास संबंधित विषय पर बात करने के लिए पर्याप्त सामग्री और विचार नहीं होंगे।

तैयारी करने से आपको उस विषय को और अच्छी तरह समझने में मदद मिलेगी। इससे अध्यापक व विद्यार्थी, दोनों को मदद मिलेगी। तैयारी करने से आपकी विचार प्रक्रिया सक्रिय होती है।

पढ़ाते समय अध्यापक खुद अपनी रचनाशीलता और जीवन अनुभवों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

ख. पढ़ाते समय एक ही जगह पर खड़े न रहें बल्कि कक्षा में लगातार टहलते रहें।

ग. पढ़ाते समय गलतियां हो जाना एक आम बात है और कोई भी अध्यापक पूरी तरह दोषरहित नहीं होता। लिहाजा, अगर आपको ऐसा लगता है कि आपने कोई गलती कर दी है तो उसको खुद स्वीकार करें और उसे दुरुस्त करें।

घ. कई विद्यार्थी ऐसे हो सकते हैं जो कहेंगे कि आपकी कक्षा बहुत उबाऊ और बोरिंग है। आपको इस तरह की टिप्पणियों से हताश होने की जरूरत नहीं है। हो सकता है आपके पढ़ाने से एक-दो बच्चे उब गए हों मगर बहुत सारे बच्चों की दिलचस्पी बनी हुई हो।

ङ. हिम्मत न हारें - हिम्मत हार देना तो बहुत आसान है मगर असली बात है चुनौती को स्वीकार करना और धैर्यपूर्वक प्रयास करते जाना। याद रखें कि अध्यापन वास्तव में धैर्य की ही परीक्षा है।

३.१.३ प्रेक्टिकल

बच्चों को शिक्षा केंद्र में मौजूद बच्चों की संख्या गिनना सिखाएं, या, कि कक्षा में कितने जोड़ी पैर या कितने हाथ हैं आदि। उन्हें बैग, कपड़ों आदि के रंग पहचानना सिखाएं। बच्चों को अंग्रेजी और हिंदी की वर्णमाला आदि सिखाएं।

३.१.४ मन बहलाव - अपनी जगह बदलें

क. सहभागियों से अपनी सीट बदलने के लिए कहें ताकि वे बदलाव के साथ जुड़ी भावनाओं को महसूस कर सकें। जब सभी फिर से बैठ जाएं तो उनसे पूछें:

१. सीट बदलने के लिए कहे जाने पर आपको कैसा महसूस हुआ?

२. क्या आपको किसी और की नई सीट पर बैठने का मौका पाकर अच्छा लगा या आपको अवांछित बदलाव से दिक्कत हुई?

३. कौन सी चीजें हैं जिनके चलते लोग बदलाव का विरोध करते हैं?

ख. विचारों का जालाः किसी भी शीर्षक पर आयोजित कार्यशाला के लिएः

१. दर्शकों/श्रोताओं से विचार इकट्ठा करें।

२. उन्हें बोर्ड/कागज पर लिखते रहें।

३. किसी भी विचार की आलोचना न करें।

४. विचारों को अलग-अलग समूहों में वर्गीकृत कर दें।

५. अगर कोई अनिश्चित किस्म का विचार सामने आता है तो उस पर चर्चा करें और उसे भी किसी श्रेणी के तहत श्रेणीबद्ध कर दें।

६. फिर से विचारों पर चर्चा करें और देखें कि वे किसी अवधारणा में समा पाते हैं या नहीं।

ग. इसके बारे में मुझे बताएं:

१. किसी विद्यार्थी के ऐसे अनुचित व्यवहार के बारे में बताएं जो आपको परेशान करता है।

२. इस व्यवहार की वजह क्या है? क्या उसे हर वक्त इसी तरह का बर्ताव करना अच्छा लगता है?

३. जब वह इस तरह का व्यवहार करता/करती है तो आप क्या करते हैं और इससे कोई फर्क पड़ा है?

४. क्या इस बच्चे से निपटने का कोई और तरीका है?

५. बच्चे के व्यवहार में आप किस तरह के बदलाव की उम्मीद करते हैं?

घ. बच्चों को पिकनिक के लिए ले जाएं और उन्हें शतरंज और कैरम वगैरह खेलने का मौका दें। खो-खो जैसी गतिविधियां भी आयोजित की जा सकती हैं।

सीखने के स्तर

याद रखना समझना लागू करना विश्लेषण करना मूल्यांकन करना रचना करना जो पढ़ाया था उसे याद करें जो पढ़ाया गया उसे समझाएं जो पढ़ाया गया उसे इस्तेमाल करें रुझान देखें, तुलना और फर्क देखें सूचनाओं और विचारों का आकलन करें नई सोच और नए तरीके विकसित करने के लिए सीखी गई चीजों का प्रयोग करें।

ब्लूम, १९५६३ से लिया गया।

सत्र ३: पाठ्चर्या

४.१.१ पाठ्चर्या

क. प्री-प्राइमरी के लिए: सीखने के क्षेत्र

१. संप्रेषण और भाषा - किसी वस्तु की तरफ संकेत करके उसका नाम जोर से बोलें और बच्चों को उसे दोहराने के लिए कहें।

२. संख्याएं - संख्याओं को सीखना, आकृतियों को चीजों के साथ जोड़कर दिखाना, घड़ी में समय पढ़ना (क्या बच्चे घड़ी बनाकर उसमें समय बता सकते हैं), पैटर्न सीखना (लड़के और लड़कियां खड़े होंगे, एक खड़ा/खड़ी और दूसरा बैठा/बैठी हो आदि), तुलना और विषमता (पहने हुए कपड़ों का रंग, जूतों का आकार आदि), छंटाई (जैम, चॉकलेट, रंगीन मोती या मनके)।

३. शारीरिक विकास - शरीर के विभिन्न अंगों को पहचानना, कक्षा से पहले वार्मअप।

४. व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास - यह सिखाना कि औरों का अभिवादन कैसे करें। विद्यार्थी अपनी उम्र, मां-बाप के नाम, रिश्तेदारों के नाम, उनके गांव और राज्य का नाम जानें। बच्चों को मां-बाप के फोन नंबर याद कराएं।

ख. प्राइमरी कक्षाओं के लिए: सीखने के क्षेत्र

१. गणित - जब आप चीजें खरीदते हैं तो जोड़ और घटा का अभ्यास करें।

२. अंग्रेजी - बच्चों को अंग्रेजी में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें (बात करना सोचने में मददगार होता है)। विद्यार्थियों को किताबें पढ़वाएं।

३. विज्ञान - पशु-पक्षी, शरीर के अंग, सौर-व्यवस्था, धरती और इसका परिवेश, पेड़-पौधे, मौसम आदि।

४. भाषा - बच्चों को अपने घर की भाषा में बात करने के लिए और फिर दूसरी भाषा में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। कक्षा में किताबों को बोल-बोल कर पढ़वाएं।

४.१.२ पाठ्यचर्या के बाहर

बच्चों को स्वच्छता के बारे में सिखाना बहुत जरूरी है। बच्चों को पता होना चाहिए कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतों से क्या फायदे होते हैं। इस प्रसंग में उन्हें मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें सिखाई जाएं:

१. व्यक्तिगत सफाई: हर रोज नहाना और हर रोज दांत साफ करना।

२. साफ कपड़े पहनना और हर रोज कपड़े बदलना।

३. नाखून काटना और बाल छोटे रखना।

४. खाना खाने के पहले और खाना खाने के बाद हाथ धोना।

५. घर में और आसपास साफ-सफाई रखना।

६. अध्यापक को कुछ समय निकाल कर यह देखना चाहिए कि बच्चे कक्षा में साफ-सुथरे आ रहे हैं या नहीं। उन्हें बताना चाहिए कि बच्चों को व्यक्तिगत साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए।

बच्चों को दूसरों की फिक्र करने और उनके साथ मिल-बांट कर चीजों को इस्तेमाल करने और स्वार्थी न होने की आदत सिखाना भी बहुत जरूरी है। उन्हें बताएं कि उन्हें हमेशा अच्छे काम करने चाहिए और कभी भी किसी को चोट नहीं पहुंचानी चाहिए। इसके लिए विद्यार्थियों को यह दिखाया जा सकता है कि अध्यापक खुद बच्चों और अपने सहकर्मियों से किस तरह का व्यवहार करते हैं।

शिक्षा केंद्र में अध्यापकों को मां-बाप की तरह बर्ताव करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे का पूरा ख्याल रखना चाहिए। उन्हें बच्चों से दोस्ती भरे संबंध बनाने चाहिए ताकि विद्यार्थी बेहिचक उनसे अपनी और अपने परिवार की समस्याओं के बारे में बात कर सकें। इसके अलावा, जो लड़कियां यौवनारंभ या प्यूबर्टी के निकट पहुंच रहे हैं ऐसी लड़कियों को अध्यापक विशेष मार्गदर्शन दे सकते हैं कि उन्हें माहवारी के दिनों में किस तरह खुद को संभालना चाहिए। अध्यापकों को ऐसे बच्चों में खास दिलचस्पी लेनी चाहिए जो पढ़ाई छोड़ देते हैं, खासतौर से लड़कियां जिनकी बहुधा कम उम्र में शादी हो जाती है। कहने का मतलब यह है कि अध्यापकों को लगातार चौकस रहना चाहिए और बच्चों के साथ एक दोस्ताना संबंध रखना चाहिए। जो बच्चे औपचारिक स्कूलों में जा चुके हैं उनके साथ भी अध्यापकों को संबंध बनाए रखना चाहिए।

४. मूल्यांकन

५.१.१ मूल्यांकन

विद्यार्थियों का मूल्यांकन इस आधार पर किया जा सकता है कि उनकी:

काम में रुचि कितनी है - बहुत उत्साही, उत्साही, कम उत्साह।

सीखने की सामर्थ्य - धीमा, तेज, उम्मीदों से भी तेज।

काम की गुणवत्ता - अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं, अच्छा और मामूली गलतियां, शानदार।

समस्या समाधान - निर्णय प्रक्रिया में मार्गदर्शन की आवश्यकता, थोड़ी-बहुत सहायता से अच्छे फैसले लेना, स्वतंत्र रूप से फैसले लेना।

टीम वर्क - गैर मददगार, कभी-कभी मददगार, बेहद मददगार।

भरोसेमंद - कक्षा में नहीं आता, कक्षा में उपस्थित, बढ़िया कार्य व्यवहार और हमेशा भरोसा करने योग्य।

सुपरविजन पर प्रतिक्रिया - निर्देशों को नहीं मानता/मानती, निर्देशों को सुनता/सुनती है और उन्हें लागू करता/करती है, निर्देशों का पालन करता/करती है।

लिखित संप्रेषण - विचारों में स्पष्टता नहीं है, सामान्य रूप से स्पष्टता है, हमेशा स्पष्टता है।

नैतिक व्यवहार - अनुचित व्यवहार से बचने के लिए सलाह की जरूरत पड़ती है, अनुचित व्यवहार से बचने के लिए उपयुक्त कदम उठाता/उठाती है, ऐसे व्यवहार से बचने के लिए कदम उठाता/उठाती है।

विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए कमेटियां बनाई जा सकती हैं। इसके लिए अभिभावक-शिक्षक समिति बनाई जा सकती है जिसकी हर हफ्ते में एक बार बैठक होनी चाहिए। इसके अलावा निगरानी समिति में स्थानीय परिवारों की १०-१५ महिलाएं हों और उनकी दो हफ्ते में एक बार बैठक बुलाई जाए। युवा समिति में ऐसे बच्चों को लिया जाए जो औपचारिक स्कूलों में जा चुके हैं। इस

समिति के सदस्यों को नियमित रूप से अध्यापकों से बात होनी चाहिए और उन्हें आवश्यकता के अनुसार सहायता भी मिलनी चाहिए। यह युवा समिति औपचारिक स्कूलों में हाल ही में दाखिल हुए बच्चों की प्रगति पर नजर रख सकती है।

जब एक बार बच्चों का मूल्यांकन कर लिया जाए तो उनको औपचारिक स्कूलों में भेजा जा सकता है। अध्यापकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे अपनी सामर्थ्य के आधार पर स्कूल में दाखिल हों। उन्हें बच्चों को स्कूल में दाखिले के लिए तैयार करना चाहिए।

अध्यापक की भूमिका बच्चों के औपचारिक स्कूल में दाखिले के साथ ही खत्म नहीं होती। उन्हें स्कूल में दाखिल कराए गए बच्चों की प्रगति पर लगातार नजर रखनी चाहिए। वे स्कूल के अध्यापक से मिलकर ऐसे बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी ले सकते हैं। उन्हें इस बात पर भी नजर रखनी चाहिए कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं या नहीं। इसके लिए वे स्कूल में पहले दाखिला ले चुके बच्चों से जानकारी ले सकते हैं।

६.१ सामान्य सिफारिशें

आखिर में, चरित्र शिक्षा के लिए यहां कुछ सामान्य सिफारिशें दी गई हैं। एक चेतनाशील शिक्षक के रूप में आप इनमें से कई कामों को पहले ही कर रहे होंगे।

१. एक संरक्षक, मॉडल और मार्गदर्शक के रूप में व्यवहार करें:

* विद्यार्थियों के साथ प्यार और सम्मान भरा व्यवहार करें।
* एक अच्छी मिसाल पेश करें।
* समाज-अनुकूल व्यवहार को समर्थन दें, तथा
* हानिकारक हरकतों को दुरुस्त करें।
* कक्षा में एक नैतिक समुदाय की रचना करें:
* विद्यार्थियों को एक-दूसरे को जानने में मदद दें।
* एक-दूसरे का सम्मान और फिक्र करें।
* बच्चों को इस बात का अहसास दिलाएं कि समूह में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।
* नैतिक अनुशासन का व्यवहार करें:
* ऐसे नियम और अवसर पैदा करें जिनसे बच्चों में नैतिक तर्कशीलता, स्वनियंत्रण और दूसरों के प्रति सम्मान का भाव पैदा हो।
* एक लोकतांत्रिक कक्षा परिवेश रचें:
* विद्यार्थियों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करें तथा
* कक्षा को बैठने और सीखने के लिए एक अच्छी जगह बनाने की प्रक्रिया में उन्हें साझीदार बनाएं।
* पाठयचर्या के जरिए मूल्यों की शिक्षा दें:
* अकादमिक विषयों को नैतिक मुद्दों के विश्लेषण का साधन बनाएं। (यह एक समानांतर स्कूल व्यापी रणनीति होनी चाहिए, जैसे नशीले पदार्थों के सेवन की रोकथाम या यौनिकता शिक्षा जैसे मुद्दे जो किसी एक कक्षा तक सीमित नहीं होते)।
* नैतिक सोच को बढ़ावा दें:

- पढ़ने, लिखने, चर्चा करने, निर्णय प्रक्रिया के अभ्यास और बहस मुबा. हिसे के जरिए।
- टकराव समाधान सिखाएं:
- विद्यार्थियों के पास निष्पक्ष और गैर-हिंसक ढंग से टकरावों का समाधान करने की क्षमता और चाह होनी चाहिए।

* कक्षा के बाहर भी फिक्रमंदी का व्यवहार सिखाएं:
  - प्रेरक व्यक्तित्वों का प्रयोग करें तथा स्कूल व समुदाय में सेवा के अवसरों के जरिए विद्यार्थियों को दूसरों के प्रति फिक्रमंद होना सिखाएं।
* स्कूल में एक सकारात्मक नैतिक संस्कृति की रचना करें:
  - एक ऐसा समावेशी स्कूल वातावरण (प्रधानाचार्य एवं प्रशासकीय कर्मचारियों के नेतृत्व में) बनाएं जो कक्षा में पढ़ाए जाने वाले मूल्यों को और पुष्ट व परिवर्धित करे।
* चरित्र शिक्षा में अभिभावकों तथा समुदाय को साझीदार बनाएं:
  - अभिभावकों को बच्चों के पहले नैतिक शिक्षक के रूप में मदद दें;
  - मां-बाप को अच्छे मूल्य सिखाने की स्कूल की चेष्टा में सहायता की कोशिश करें;
  - स्कूल जो मूल्य पढ़ाने का प्रयास कर रहा है उनको पुष्ट करने के लिए समुदाय (पंचायत, शासन, समुदाय प्रमुखों) की सहायता लें।

७.१ निष्कर्ष

इस मैन्युअल में हमने अध्यापक की विभिन्न भूमिकाओं को देखा है। सामान्य स्कूल के मुकाबले यहां अध्यापक को खुद बाहर जाकर विद्यार्थियों को ढूंढना होगा और उन्हें पढ़ाने के लिए अभिभावकों तथा समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करने होंगे। यह एक दोतरफा प्रक्रिया है जिसमें बच्चों को शिक्षा देकर उन्हें औपचारिक स्कूलों में दाखिला दिलाया जाएगा तथा अभिभावकों और समुदायों को जिंदगी के विभिन्न अहम पहलुओं के बारे में सीखने का मौका भी मिलेगा।

© सेंटर फॉर एजुकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन (सीईसी)

173-A, खिड़की गांव
मालवीय नगर
नई दिल्ली - 110017
T: 91 11 29541841 / 29541858
F: 91 11 29542464
E: cec@cec-india.org
W: www.cec-india.org

जनवरी 2015

यह मैन्युअल जेन आयर मैथ्यू द्वारा मनीषा गुप्ता, पल्लवी मानसिंह, विनयराज वी.के. एवं ज़ीनत अफ़शां की मदद से तैयार किया गया है।

यह शिक्षक प्रशिक्षण मैन्युअल सेंटर फॉर एजुकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन द्वारा यूरोपीय यूनियन की आर्थिक सहायता से और फेयर ट्रेड फोरम इंडिया एवं ट्रेडक्राफ्ट के साथ मिल कर लागू की जा रही "घरखाता दस्तकारी उद्योग में बाल श्रम उन्मूलन के लिए टिकाऊ समाधानों की तलाश" परियोजना के हिस्से के तौर पर तैयार किया गया है। इस दस्तावेज में व्यक्त किए गए मत अनिवार्यतः यूरोपीय संघ के विचार नहीं हैं।

CENTRE FOR EDUCATION AND COMMUNICATION (CEC)
173-A, Khirki Village, Malviya Nagar, New Delhi – 110017
Tel: 91-11-29541858/ 2473/ 1841/ 3084 Fax: 91-11-29545442/ 2464
Email: cec@cec-india.org Website: www.cec-india.org